नालंदा मुक्त विश्वविद्यालय

स्नातक प्रथम ,पत्र-2

माखन लाल चतुर्वेदी -"कैदी और कोकिला "

माखनलाल चतुर्वेदी (1889-968ई.)की रचना शैली द्विवेदी युग से निखरने लगती है । इनकी रचनागत स्थिति को प्रसिद्धि छायावादी युग के समानांतर चल रही राष्ट्रीय सांस्कृति काव्य धारा के रूप में मिली। ये सुधी चिंतक, सुकवि और प्रखर पत्रकार के साथ साथ स्वतंत्रता संग्राम के सफल अनुयायी थे । इनकी चेतना राष्ट्रहित में सदैव धड़कती रहती थी शायद यही वजह है कि यह एक भारतीय आत्मा के नाम से जाने जाने लगे । इन्होंने 'प्रभा', 'प्रताप',' कर्मवीर' जैसे पत्रिकाओं का संपादन कार्य भी संभाला। इनकी प्रमुख रचनाओं में 'हिमकिरीटिनी', 'हिमतरंगिनी' आदि हैं । उन्हें 'हिमतरंगिनी' के लिए 1955 में हिंदी के साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।

'कैदी और कोकिला ' माखनलाल चतुर्वेदी की काफी प्रसिद्ध रचना है ।कैदी और कोकिला ब्रिटिश उपनिवेशवाद के शोषण की कलई खोलती कविता है। यह कविता भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों के साथ हुए अत्याचार का साक्ष्य प्रस्तुत करती है । कवि जेल में कोयल से अंग्रेजी हुकूमत के प्रति अपने असंतोष और आक्रोश व्यक्त करता है । कवि कोयल से कहता है कि यह समय मधुर गीत गाने का नहीं बल्कि मुक्ति- गीत सुनाने का है । कवि को महसूस होता है इस काली रात को कोयल एक कारागार के रूप में देखकर चीख उठी है, इसीलिए कवि कोयल से कुछ यूं पूछता है-

"क्या गाती हो ?

क्यों रह -रह जाती हो ?

कोकिल बोलो तो !

क्या लाती हो ?

संदेशा किसका है !

कोकिल बोलो तो !"

कवि अपनी इस कविता के माध्यम से यह बताना चाह रहा है की पक्षी भी अब ऊब चुके हैं और हम तो फिर भी मनुष्य हैं वे लोगों में जागृति की भावना भरने का प्रयास कर रहे हैं, जिसमें वे कोयल को संकेत बनाकर कहते हैं कि यह भी अब अंग्रेजी हुकूमत की बेड़ियों को देखकर व्याकुल हो रही है ,और उसी क्षण कवि उसमें आत्मबल भी भरते हैं कि यह तो ब्रिटिशी ही गहना है। अगली पंक्ति में फिर कवि अंग्रेजी हुकूमत के व मानवीय व्यवहार का वर्णन करता है कि कैसे स्वतंत्रता सेनानियों से कोल्हू चलवाया जाता है, पत्थर तुड़वाया जाता है, कैसे पेट पर लकड़ी बंधवाकर उससे पानी निकलवाया जाता है । इन सब तमाम बाधाओं के बावजूद कवि अगली पंक्ति में स्वतंत्रता प्रेमियों की मस्ती भी दिखाते हैं -

"क्या ? देख न सकती जंजीरो का गहना ?

हथकड़ियां क्यों ? ये ब्रिटिश -राज का गहना,

कोल्हू का चंरक चूँ ? जीवन की तान ,

गिट्टी पर अँगुलियों ने लिखे गान ।

हूँ मोट खींचता पेट पर जूआ ,

खाली करता हूँ ब्रिटिश अकड़ का कुआँ ।

दिन में करुणा क्यों जगे ,रुलानेवाली ,

इसलिए रात में गजब ढा रही आली ?"

कवि 'कैदी और कोकिला' के माध्यम से इस ओर इंगित करता है की स्वतंत्रता सबों को प्यारी है । कोयल जहां अपने गान के माध्यम से कैदियों में स्वतंत्रता की प्रबल भावना भर रहा है वहीं कैदी लगातार अंग्रेजी सरकार की यात्राएं से स्वयं को आगे की बिजयी के लिए मजबूत कर रहा है। कवि यहां कोयल की आवाज को आजादी के संदेश के रूप में देखता है, जिसे सुनकर कैदी कुछ भी करने को आतुर हैं। कैदी कोयल से पूछता है कि बता मैं स्वतंत्रता संग्राम में किस तरह अपने प्राण झोंक दूँ। मेरे अंदर अग्नि की जो ज्वाला उठ रही है उसका प्रयोग देश हित में कैसे करूं यह तुम मुझे बताओ अर्थात एक सफल नेतृत्व कर्ता के साथ स्वयं को झोंकने को आतुर है -

"इस हुंकृति पर ,

अपनी कृति से और कहो क्या कर दूँ

कोकिल बोलो तो ।

मोहन के व्रत पर ,

प्राणों का आसव किसमें भर दूँ ।

कोकिल बोलो तो !"

माखनलाल चतुर्वेदी की कविता 'कैदी और कोकिला' शिल्प की तुलना में अधिक भाव प्रबल है ।चतुर्वेदी जी ने परंपरागत छंदबद्धता एवं तत्सम शब्दावलियों के स्थान पर बोलचाल की भाषा के साथ-साथ उर्दू व फारसी के शब्दों का भी यथासंभव प्रयोग किया है।

सारांशतः हम कह सकते हैं कि 'कैदी और कोकिला' नामक कविता पूर्णता स्वतंत्रता की ओर प्रेरित करती है जिसके माध्यम से माखनलाल चतुर्वेदी ने आमजन की चेतना को जागृत करने का सफल प्रयास किया है ।

आवश्यक निर्देश - समस्त विद्यार्थीगण को निर्देशित किया जाता है कि वे इसी तरह अन्य पाठों का भी अध्ययन कर पाठ के मूल भाव को समझें । उससे से संबंधित प्रश्न - उत्तर का अभ्यास करें । विश्वविद्यालय द्वारा प्रदत्त पाठ्य सामग्रियों में मूल पाठ के साथ-साथ पाठ का सारांश, उसका उद्देश्य ,लेखक परिचय जैसे आवश्यक तत्व संकलित हैं जिसका अध्ययन विद्यार्थियों के लिए अति आवश्यक है ।

डॉ. बद्री नारायण सिंह

समन्वयक हिन्दी

नालंदा मुक्त विश्वविद्यालय